IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M05/1/A1HIN/SP1/HIN/TZ0/XX

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Tuesday 3 May 2005 (morning)
Mardi 3 mai 2005 (matin)
Martes 3 de mayo de 2005 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

1.(क)

सायं चार बजे के करीब लड़की वालों ने अपनी कार उनको लेने के लिए भेज दी। उन दिनों में कार एक बड़ी चीज थी। कार में बैठकर लड़की देखने जाना था। लड़की देखने का चाव और भी बढ़ गया। इस लिए पांच बजे सायं के करीब वो लड़की देखने चले गये।

रात ग्यारह बजे वहाँ से खबर आई कि अन्य सभी मिलकर लड़की देखकर तय करेंगे कि लड़की पसंद आई कि नहीं। इस तरह तकरीबन दो दर्जन व्यक्ति और उसी काम के लिए चले गये। क्योंकि उनकी वहाँ अच्छी खातिरदारी हुई, इसीलिए लड़की वाले की आवभगत और उसके खर्च का एस्टीमेट देखकर 'हाँ' कर दी। घर आकर सब अपनी अपनी सफाई देने लगे कि हमने तो दूसरे के कहने पर 'हाँ' भर दी। यद्यपि लड़की लड़के के लायक नहीं है। लड़की भारी भी है और काली भी। चेहरे पर माता के निशान भी हैं।

खैर शादी हो गई। लड़की भारी, काली और चेहरे पर माता के निशान वाली ही थी। उसे देखकर रजनीश का उसकी तरफ मन नहीं खिंचा। वह अलग-अलग और अनमना-सा रहने लगा। इसके विपरीत लड़की का स्वभाव बड़ा हंसमुख और सरस तो था ही पर रजनीश को तो उसने जैसे अपना सब कुछ समझ कर सब कुछ समर्पण कर दिया था। वह स्वयं कहती ,"मैं आपके योग्य न थी, बल्कि परमात्मा ने मेरी चाह पूरी कर दी। आप को मेरे से कोई शिकायत नहीं होगी। आप जैसा चाहेंगे वैसा ही होगा और मैं वही करूंगी जैसा आप चाहेंगे।"

नई नवेली बहु जिसका नाम रितु था, का स्वभाव देखकर रजनीश को कुछ ढांढस बंधा और वह सोचने लगा कि वह अपने घर वालों की ग़लती की सजा रितु को क्यों दे ? इस में इसका क्या दोष है ? उसे यह कहावत सच्ची लगती थी कि लड़की तो गाय की तरह है। जिस खूँटे पर बाँध दो बँध जाती है। इस तरह रजनीश के मन में कुछ उदारता और दयाभाव उभरने लगे। दो तीन महीनों में ही सब सामान्या-सा हो गया।

यद्यपि अब रजनीश के मन में कोई संताप या पश्चाताप नहीं था लेकिन फिर भी वह अपनी पत्नी की ओर बहुत आकर्षित नहीं था। इस लिए उसकी पढ़ाई में कोई बाधा नहीं आई। पत्नी के प्रति आकर्षण की कमी और पत्नी के पूर्ण सहयोग ने उसकी पढ़ाई में और ज़्यादा योगदान ही किया।

अब उसकी समझ में आ रहा था कि उसके पिता जी ठीक कहते थे। उनका कहना था "पिता शत्रु ऋणबन्दी, माता शत्रु व्यभिचारणी, पुत्र शत्रु बिना विद्या, स्त्री शत्रु रूपवती।"उसको यह भी समझ में आ गया था कि जो होता है अच्छा होता है। आज वह एक उच्च अधिकारी है। वह इसका श्रेय अपनी पत्नी के कालेपन, मोटेपन इत्यादि को तथा उसके भरपूर सहयोग को देता है। यद्यपि ऐसा न होता तो कुछ और ही होता। गोरी पत्नी उसको सहयोग की बजाय अपने इशारों पर ही नचाती।

'विरासत का दर्द' डॉ. धनप्रकाश गुप्त 2001
संजीव प्रकाशन, 3613 सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -2

- इस गद्य के विषयवस्तु द्वारा लेखक ने क्या कहने का प्रयास किया है ?
- लेखक की भाषा और शैली पर विचार-विमर्श करते हुए बताएं कि क्या वह अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कह पाया है ?
- गद्य में प्रस्तुत की गई रजनीश के पिता की विचारधारा के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?
- इस गद्य के विषयवस्तु ने आप के मन पर क्या प्रभाव डाला ?

1.(ख)

"शब्द"

तुम्हारे 'शब्दों' की दहलीज़ पर आकर
ठिठक जाते हैं मेरी भावनाओं के पैर !!
भीतर जाने की सोचते ही
काँप जाती हैं कोमल पत्ते सी।
ऐसे भी लहूलुहान कर सकते हैं शब्द .
सोचा ही नहीं .....
शिला से कठोर;
गाली से निर्लज्ज;
वासना से गिजगिजे;
अजनबी से पराए;
शब्दों की ऐसी चौखट लाँघ
कैसे 'तुम' तक पहुँचू ???
मैं सोच नहीं पाती !!!
और तुम ....
अपने शब्दों की कंटीली बाढ़ के परे
उगती
मेरी कोमल भावनाओं को देख नहीं पाते;
छू नहीं पाते;
सूँघ नहीं पाते;
एक ही ज़मीन पर,
रहते हैं साथ-साथ,
पर करते नहीं संवाद ....
कहो,
कैसे जिएँ ???

***डॉ. शैलजा (लंदन) "पुरवाई"* अप्रैल-जून 2001**
यू के हिन्दी समिती
130 पैवीलियन वे, रुईसलिप,मिडलसैक्स, एच ए 4 9 जे पी

- कवित्री ने कविता के विषयवस्तु के संदर्भ में दैनिक जीवन पर कैसी चोट लगाई है ?
- क्या कवित्री अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने में सफल हो पाई है ?
- कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं।
- इस कविता के विषयवस्तु ने आपके मन पर क्या प्रभाव डाला ?